विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 11-02-2021

वर्ग षष्ठ शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव,

त्वमेव विद्या, द्रविणं त्वमेव,

त्वमेव सर्वं ममः देवदेवा ||

तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधू, सखा तुम्ही हो |

तुम्ही हो साथी, तुम्ही सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे.

तुम्ही हो नय्या, तुम्ही थे वैयाँ, तुम्ही हो बंधू, सखा तुम्ही हो |

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।

श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ।।“

अर्थः---हाथ का गहना दान करना है, कण्ठ (गले) का आभूषण सत्य का यथोचित व्यवहार करना है, कानों का भूषण वेद-आदि शास्त्रों व सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय और महान् गुरुओं व विद्वानों से श्रवण करना है । इतने उत्तम आभूषण के रहते इन सांसारिक कुण्डलादि गहनों की क्या आवश्यकता है । इनकी क्या महत्ता है ।